प्रेस विज्ञप्ति

आदिकाल से ही हमारे भारतवर्ष में नारी को सम्मानीय व पुरुष से भी उतम दर्जा दिया जाता रहा है तभी तो गायन में भी पहले राधा फिर कृष्ण,श्री लक्ष्मी- नारायण, सीता- राम आदि का नाम आता है। स्त्री पुरुष को समान अधिकार थे शासक हो या प्रजा दोनों ही जगह नारी को पुजनीय व घर की लक्ष्मी समझते थे धीरे –धीरे समय का चक्र बीतने के साथ ही जहां आत्मा की शक्ति कमजोर हुई लोग अपने को देहधारी समझने लगे। समाज पुरुष प्रधान होता चला गया। जिस नारी को मनुष्य दैवी के समान दर्जा देते थे। उसे भोग- विलास की वस्तु समझा जाने लगा। पुरुष प्रधान समाज में नारी का तेजी से अधोपतन होने लगा उसे घर की चारदीवारी में कैद कर दिया गया। समय के साथ बुराईयां भी बढ़ती चली गई। समाज में अनेक कुरीतियां जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा,सती प्रथा आदि से नारी का अधिक शोषण होने लगा और आज तो अल्ट्रासाउण्ड जैसी आधुनिक मशीनों के अविष्कार के बाद समाज में कन्या हत्या होने लगी, भ्रूण का गर्भ में ही लिगं परीक्षण कर,यदि लड़की है तो उसे जन्म से पहले ही मार दिया जाता है, इस कारण लिगांनुपात असंतुलित होता जा रहा है भारत के कई राज्य पहले से ही इस समस्या से जूझ रहे हैं। ये भविष्य में व्यभिचार, अनाचार, दुराचार को बढ़ावा देगा। दहेज प्रथा एंव वंश परंपरा जैसी कुरीतियां इसके लिये जिम्मेवार हैं। आए दिन बलात्कार जैसी घटनाएं हम पेपर में पढ़ते हैं, कहीं किसी को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता है या जला दिया जाता है तो कहीं वो घरेलू हिंसा का शिकार हो रही है। समाज में नारी की ऐसी दूर्दशा देख कर हमारी रूह कांप जाती है। सरकार ने कानून अवश्य बनाये हैं परन्तु समाज में नारी के सम्मान एंव गौरव को पुन: प्रतिस्थापित करने के लिये जागृति लाना आवश्यक है। वर्तमान में शिक्षित नारी ने सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता को सिद्ध किया है वह अपने अधिकारों के प्रति जागरुक है और समाज के विकास में अपना योगदान दे रही है। परन्तू शिक्षा की यह अलख ग्रामीण भारत तक पूर्णरुप से नहीं पहुँच पाई है जहाँ आज भी समाज अनेक कुरीतियों के गिरफ्त में है. महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये समाज में जागृति लाना

समाज की इस विकृति को समाप्त करने के प्रयास के लिये प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सहयोगी संस्था राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के महिला प्रभाग द्वारा अखिल भारतीय **“बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ”** अभियान-वर्ष 2015-16 भारत के लगभग सभी राज्यों में निकालने का कार्यक्रम बनाया गया है ताकि महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा एंव सशक्त बनाने के प्रति देश में व्यापक नैतिक एंव आध्यात्मिक जागृति लाई जा सके। महिलाएं एवं बच्चे जिस सुरक्षा एवं संरक्षा प्राप्त करने के हकदार है, उन्हें प्रदान करने के लिए चलाये जा रहे इस अभियान में हम और आप हिस्सा बन सकते हैं।

इस अभियान का आरम्भ अक्टूबर मास से दिल्ली में किया गया है। वर्ष 2016 तक चलने वाले इस जन-जागृति अभियान के अंतर्गत पूरे भारत में क्षेत्रीय यात्राएं निकाली जाएंगी।

“बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ” अभियान का मुख्य लक्ष्य समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक जागृति लाकर उन्हें स्वयं की सुरक्षा के लिये सशक्त बनाना, महिलाओं के प्रति मानसिकता में परिवर्तन लाना, सार्वजनिक स्थलों, परिवहन तंत्र एवं वाहनों को नारियों के लिए अधिक सुरक्षित बनाने के लिये जन-जन को प्रेरित करना, अश्लील साहित्य, सिनेमा, विज्ञापन आदि पर अंकुश हेतु सामाजिक जागृति लाना है।

इस अभियान को जन-जन तक पहुंचाने के लिये सुरक्षा प्रतीक चिन्ह (लोगो) स्टिकर्स, ग्रोसरी बैग्स, होर्डिंग्स, बैनर्स आदि का प्रयोग किया जायेगा।